

लीलारब्ध स्थापितलुप्ताखिललोकान,  
लोकातीतैर योगीभिर्त्तरहृदिमृग्याम  
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जाम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

लीला है जिनकी सृष्टि रचना, पालन करना ,लय  
करना

सृष्टि से परे योगी शिव के अंतरहृदय विचरण  
करना।

प्रातः सूर्य समूह प्रकाश के जैसी है जिनकी आभा  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ॥

आशापाश क्लेशविनाशं विदधानां  
पादाम्भुज ध्यानपराणां पुरुषाणां।  
ईशी ईशार्धाङ्गहरां ताम अभिरामां  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये

काटे इच्छाओं के बंधन, क्लेश मिटावें देवें ज्ञान  
चरण कमल में ध्यान परायण रहने वाले भक्तों  
का

शिव का अर्ध अंग धारण कर ईश्वरी पाए अभिराम  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम।।

प्रत्याहार ध्यान समाधि स्थिति भाजाम  
नित्यं चिते निवृत्ति काष्ठां कल्याणतीम।  
सत्य ज्ञानानंदमयीं ताम तनु मध्याम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

विषय त्याग एकचित ध्यावे और हो निश्चय में  
दृढ़ता,  
कष्ट हरे कल्याण करे मां ऐसे नित्य चित भक्तों  
का।  
ब्रह्म ज्ञान और आनंद देने वाली मां रहती  
मध्यधाम  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ॥

चंद्रापीडान्दित मंदस्मितवक्त्राम  
चंद्रापीडालंकृत लोलालक भाराम  
इन्द्रोपेन्द्राभ्यर्चित पादाम्भुज युग्माम्  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

आनंदित हैं देख देख ,शिव के मुखमंडल की  
मुस्कान  
चंद्र सुशोभित घुंघराली लट मां की दे प्राचुर्य  
वरदान।

पूजें जिनके पाद्यकमल दो, इंद्रदेव, विष्णु भगवान  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम॥

नानाकारैः शक्ति कदम्बैर्भुवनानि  
व्यापि स्वैरं क्रीडति याऽसौ स्वयमेव ।  
कल्याणीं ताम कल्पलतामानति भाजाम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

नाना रूप धरे तुम शक्ति भवनों के समूहों में  
केवल तुम ही व्याप्त हो क्रीडारत हो सब रूपों में।  
कल्पवृक्ष जैसी वरदानी भक्तों का करती कल्याण  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ॥

मूलाधारादुत्थितवीथ्याविदिरन्ध्रं  
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम।  
ध्येयां सूक्ष्मां सूक्ष्मतनुं तां तडिदाभाम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

मूलाधार से उठे कुण्डलिनी , भेदन करे विधिरन्द्र  
सूर्य चंद्र लोकों से निकली परे रूप धरे उज्ज्वल।  
रूप तुम्हारा सौदामिनी आभा, करें ध्यान सूक्ष्म  
मध्यधाम  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ॥

आदिक्षांताम अक्षरमूर्त्या विलसन्तीम  
भूते भूते भूतकदम्बं प्रसवित्रीम।  
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तां प्रणवाख्यां  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

अ से क्ष तक वर्णों में तुम्हीं हो विलसित मूर्त रूप  
विद्यमान रहती सृष्टि के सब भूतों में सवित्र रूप।  
नाद अनाहत आनन्दमय सृष्टि रचयिता प्रणव  
ओंकार  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम॥

यस्या कुक्षौ लीनं अखण्डम जगदण्डं  
भूयो भूयः प्रादुर्भूदुत्थितमेव।  
भर्त्रा सार्धं ताम् स्फाटिकाद्रौ विहरन्तीम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

जिसकी कोख में होताओझल अखण्ड ब्रह्माण्ड  
सारा  
बिना क्षति उत्पन्न होता फिर समस्त विश्व जिनके  
द्वारा  
कांच मणि के पर्वत पर अर्धांग संग जो करे विहार  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम॥



यस्यामोतंप्रोतं अशेषं मणि माला  
सूत्रे यद्वत् क्वापि चरं क्वापिऽचरं च  
ताम अध्यात्मज्ञान पदव्या गमनीयाम  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

एक ही माला में मनके सब पिरोये रहते हैं जैसे  
सृष्टि चराचर एक ही चैतन्य में पिरोई है ऐसे।  
उत्सुक जो अध्यात्म मार्ग का कृपा आपकी पाए  
ज्ञान  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ॥

नित्यः शुद्धो निष्कल एको जगत ईशः  
साक्षी यस्याः सर्गविधौसंहरणे च।  
विश्वत्राण क्रीडनशीला शिवपत्नीं  
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीम अहम ईडये ॥

सदा सर्वदा निर्मल केवल स्वामी अखिल जगत  
का  
वही है भोक्ता, सृष्टि स्थिति लय, स्वातन्त्र्य है  
उसका।

शिव की इच्छा है क्रीडारत, करती है जगत का  
त्राण

ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम॥

प्रातःकाले भाव विशुद्धिं प्रणिधानात्  
भक्त्याः नित्यं जल्पति गौरीदशकम् यः  
वाचां सिद्धिं सम्पदं उच्चैः शिवभक्तिं  
तस्यावश्यं पर्वतपुत्री विदधाती ।।

प्रातःकाल में निर्मल भाव से होकर एकाग्रचित्त  
नित्य नियम से भक्त जपे माता गौरी का यह  
दशक ।

वाकसिद्धि, सर्वोच्च पद और शिव की भक्ति,  
पर्वतपुत्री गौरी उसे अवश्य ही देती हैं वरदान  
ऐसी कमलनयन वाली मां गौरी को मेरा प्रणाम ।।

